मंदिर में एक चूहा
A Rat in the Temple

मेरा जन्म एक हिन्दू परिवार में हुआ था. मेरे माता पिता काफी धनी थे. मेरे नाना भारत के शीर्ष औध्योगिक समूहों में से आते हैं. मैं एक बहुत ही अच्छे घर में पैदा हुआ था. मैं अपने पिता का दूसरा बेटा था. मेरे पिता की चीन मिटटी के सामानों की फैक्ट्री थी. हम कप और सॉसर बनाते थे, और यूरोप में, विश्व युद्ध १ और विश्व युद्ध २ में लड़ रहे हैं ब्रिटिश सेना को इनकी आपूर्ति करते थे. पिताजी अपने कारखाने में इसके लिए दस से बारह हज़ार लोगों को कार्यरत किया. यह एक बहुत बड़ा कारखाना था.

मुझे अपने बचपन के बारे में बहुत सी बातें याद हैं, लेकिन उनमे से एक यह है की मुझे किसी भी वस्तु के लिए दो बार पूछने की ज़रुरत नहीं पड़ती थी. मैं जो भी पूछता था, वो प्रदान कर दिया जाता था. आप कह सकते हैं की मैं बिगाड़ा गया था. आप सही हो सकते हैं, लेकिन मैं वो ही करता था, जो मैं चाहता था और मेरे पिताजी मुझे कभी मना नहीं करते थे. हमने पिताजी को वास्तव में उतना नहीं देखा क्यूंकि वे काम के मामले में व्यस्त रहते थे और माँ घर चलाती थी. वह मेरे प्रति बहुत दयालु थी, अत्यधिक दयालु. मेरे पिता एक बहुत अच्छे हिन्दू थे, मतलब वे धर्म के बारे में ज्यादा कुछ नहीं जानते थे पर विशवास ज़रूर करते थे. वे परम्परावादी थे.

उनका मानना था की हिन्दू एक धर्म हैं, वे सही काम वर्ष के सही समय पर करते थे. हालांकि मैं उन बच्चों में से था जिनके पास कई सवाल हुआ करते थे. मैं जानना चाहता था. मैं उनसे सवाल करना चाहता था, और एक दिन वे मेरे सवालों से इतना थक गए की उन्होंने मुझसे कहा, 'पहले मैं तुमसे बात करूँगा फिर तुम मुझसे करना'. और उन दिनों भारत में माता पिता ऐसा बोल सकते थे और मांग भी कर सकते थे. मामला बदल गया था, लेकिन जब मेरे पिता ने कहाँ, 'तुम मुझसे बात नहीं करोगे' मैंने नहीं किया.

मैं केवल इंतज़ार करता रहता था की मेरे पिता कब मुझसे सवाल करते और मैं उन्हें जवाब देने के पहले अपना सवाल रख देता था. लेकिन मेरे पिता ने मुझे समझ लिया और बड़े होशियारी से, मेरी माँ के द्वारा मुझसे बात करते थे, लेकिन फिर भी मेरे पास सवाल थे और वे थक जाते थे.

मेरे साथ दो बातें हुई. मैं सात या आठ का था. मेरे पिता ने मुझे हिन्दू धर्म के बारे में सिखाने के लिए एक शिक्षक को रखा. यह शिक्षक सुबह ६ बजे चला आता था, चाहे वो सर्दी के दिन हो या फिर गर्मी के, और उसके अध्यापन की भी एक विचित्र शैली थी. वह मुझे हिन्दू ग्रंथो को याद कराता था. वह मुझे याद करने के लिए एक अंश देता और जब वह अगली सुबह आता तो मुझे वह सब कुछ सुनाना पड़ता था. अगर मैं सही से सुनाता तो ठीक हैं वरना वह मुझे और ज्यादा दे देता और यह सिलसिला चलता रहा. हम प्रति ग्रन्थ की चर्चा नहीं करते थे.

यह चल रहा था, हम हर साल एक मंदिर को जाया करते थे. हम जिस जगह पर रहते थे वहां से यह मंदिर दस मील की दूरी पे था. अब मुझे यह नहीं पता की आप यह बात जानते हैं की नहीं, भारत में भगवान् के प्रति अपनी भक्ति दिखाने के लिए आमतौर पर मंदिर की ओर लोग पैदल चलते हैं. अब मेरे पिता के पास उतना समय तो था नहीं, और मुझे विश्वास हैं न ही इतनी शक्ति की वे दस मील तक चल सके. तो हम क्या करते थे की गाडी पे जाते थे. मैं यह बात पहले नहीं समझ पाया लेकिन धीरे धीरे बात मेरी पकड़ में आने लगी. हम गाडी को मंदिर के निकट तक ले जाते थे लेकिन मंदिर तक नहीं. हम गाडी कुछ गज दूरी पर छोड़, गाडी से उतर कर, फिर दस से बीस फीट की दूरी को पैदल चलके मंदिर जाते थे. मैं सोंचता की पिताजी के मन यह
विचार होगा की भगवान को नहीं मालूम होगा की यह पूरा रास्ता नहीं चला हैं, भगवान् यह सोंच के प्रसन्न होगा की यह तो अपने घर से चल के आ रहा हैं. मुझे इस मंदिर जाना पसंद था, क्यूंकि यहाँ पे एक ख़ास मिठाई भेट में चढ़ाई जाती थी, और मुझे वह मिठाई बहुत पसंद थी. वह सफ़ेद रंग की मिठाई और अत्यंत ही स्वादिष्ट थी. उसके जैसा स्वादिष्ट पूरे दुनिया में कुछ नहीं होगा. और मैं इस मिठाई के लिए इस मंदिर के वार्षिक भोज का इंतज़ार करता था. मुझे वह समय बहुत अच्छा लगता था. मेरे पिताजी, भगवान् को भेट चढाने के लिए, एक विशाल और बड़ा कटोरा भरकर यह मिठाई लेके जाते थे. हम सीढ़िया चदकर मंदिर में जाते थे, वहां बैठ कर हम अपनी भेट को चढाते थे. तब जाहिर हमें इस वार्षिक तीर्थयात्रा का आनंद उठाने का अवसर मिलता था, मेरे लिए - मिठाई का आनंद और उनके के लिए मंदिर का आनंद. इस विशेष अवसर पर हम मंदिर के अन्दर जाकर बैठ जाया करते थे. मंदिर में पुजारी और उनके सहयोगी हुआ करते थे. मेरे पिताजी की ऊँची स्थिथि के कारण हर कोई उन पर विशेष ध्यान देते थे. घंटी बजाने के बाद, हमें आँखें बंद करनी होती थी और उम्मीद करना की भगवान् हमारी भेट को स्वीकार करेंगे.
अब जब सब अपनी अपनी आँखें बंद करते, मैं अपनी आँखें खोल मिठाई के कटोरे को देखता, क्यूंकि मैं यह निश्चय करना चाहता था की उस मिठाई के साथ कोई भी छल न हो. सब होने के बाद मैं अपने पूरे हिस्से के लिए उत्सुक हुआ करता था. इस अवसर पर, जब सबने अपनी आंखें बंद रखी थी और मेरी आंखें खुली उस कटोरे को देख रही थी, एक चूहा दिखाई दिया. इस चूहे ने कटोरे तक जाने का दुस्साहस किया, जबकि हर कोई ध्यान में लीन आंखें बंद कर वही बैठे थे. मैं बौखला गया क्यूंकि मैं नहीं चाहता था की वह चूहा उस कटोरे को छुए जिसे मैं आनंद उठाने वाला हूँ. तो मैं चिल्लाया, मैंने कहाँ, 'देखो यहाँ एक चूहा हैं'. सबने आँखें खोली और मानो भगदड़ मच गयी जिससे वह चूहा भाग गया. मेरे पिताजी मुझपर बहुत क्रोधित हुए क्यूंकि मैंने उस सेवा का अनादर किया था. मुझे मंदिर में अपने दुर्व्यवहार के लिए एक असली शाही मार मिली. तीन दिन तक मुझे मेरे कमरे में बिना खाना पीना का बंद कर दिया. सौभाग्य से मेरी माँ ने उस निर्देश को अनदेखा किया और मुझे खाना पानी प्राप्त हुआ.

लेकिन मुझे उस साल वह मिठाई नहीं खाने को मिली. मेरे मन में एक सवाल उठा, 'मैं ऐसे मंदिर क्यूँ जाऊं, अगर भगवान् अपनी संपत्ति को एक मात्र चूहे से नहीं बचा सका, और क्यूँ, क्यूंकि मैं बोला, मुझे जुर्माना भरना पड़ा उस बात की जो पहली जगह में होनी ही नहीं चाहिए थी?
जब यह सब कुछ हो रहा था, और अपने दिमाग में इस बड़े सवाल के साथ मैं अपने शिक्षक के पास गया. शीर्षक एकदम सदमे की स्थिति में चला गया क्यूंकि मैंने उनसे वह प्रश्न पूछने की हिम्मत की थी. अब कृपया उनकी प्रतिक्रिया को ध्यान से सुनिए, क्यूंकि उनकी प्रतिक्रिया मेरे मन में चल रहे सारी प्रक्रिया की ओर संकेत दे रहा था. यह आदमी, मेरी आँखों में आँखें डाल के देखा, कुछ मिनीटो तक मुझे गुस्से में देखा और फिर बहुत ही गहरी आवाज़ में बोला, 'बेटा अगर तुम जवाब जानते तो यह सवाल मुझसे नहीं करते'. मैं अपने कमरे में चला गया और इस बारे में सोंचने लगा. मैं बहुत प्रभावित हुआ, मै सोंचा मैंने वाकई में बहुत ही गहरी दार्शनिक बात को जाना हैं. फिर मैंने विश्लेषण किया और जाना की उसने मुझसे सिर्फ एक बच्चो को देने वाला जवाब दिया हैं, और कुछ ख़ास नहीं बोला. तो मैं अगली सुबह ६ बजे उनके पास वापिस गया, और उनसे कहाँ, 'सर आपने मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया है', और वही प्रतिक्रिया मिली, 'बेटा अगर तुम जवाब जानते तो मुझसे यह सवाल नहीं पूछते'. लगातार कुछ प्रयासों के बाद मैंने यह निश्चय किया की यह आदमी बुद्धिमान नहीं हैं. इस बीच में शिक्षक ने सोंचा की मैं एक बेकार शिष्य था, और उन्होंने उस नौकरी से इस्तीफा दे दिया. उसने मेरे पिता से कहाँ, 'मैं आपके पुत्र को नहीं पढ़ा सकता. आपका बेटा आपके परिवार को अपमानित करने वाला हैं. वह पूरी तरह से शिक्षा से परे हैं'. शिक्षक का इस्तीफा देना परिवार के लिए एक अपमानित विषय हो गया. मुझे विधिवत सजा मिली. बेशक, कुछ समय पश्चात, मैं उनके उत्तर का दार्शनिक निहितार्थ समझ पाया, लेकिन उस समय मैं सोंचा की उसे मेरे सवाल का जवाब देना चाहिए था. और सब कुछ बंद हो गया. मैं और कोई हिन्दू ग्रन्थ नहीं सीखा. मैंने अपेक्षाकृत कम उम्र में हाई स्कूल ख़त्म किया. मैं कोई शेखी नहीं मार रहा हूँ, लेकिन मैंने बारह साल की उम्र में ही हाई स्कूल ख़त्म कर दिया था. मैं एक अच्छा विद्यार्थी था, और मैं स्कूल से बहार आना चाहता था. जब मैंने हाई स्कूल ख़त्म किया, मेरी रूचि को देखते हुए, उन्होंने मुझे विश्वविद्यालय में तीन वर्ष तक हिन्दू धर्म के बारे में अध्ययन करने का मौका दिया. मै हिन्दू के धर्म और दर्शन के बारे में इंग्लैंड के ऑक्सफोर्ड से पढाई की और वो करते मुझे बहुत अच्छा लगा. इंग्लैंड में मेरा बहुत अच्छा समय था, मैं अपने पिता से दूर था, और मैंने सोंचा की मैंने वास्तव में इसको बनाया हैं. मैंने अपने पिता को पत्र लिखा, 'पिताजी, मुझे ऑक्सफोर्ड भेजने के लिए बहुत बहुत धन्यवाद, मुझे बहुत अच्छा लग रहा हैं'. मेरे पिता नाराज हो गए और उन्होंने कहा, "मैंने तुम्हे वहां मजे करने के लिए नहीं भेजा हैं. मैंने तुम्हे वहां पढने को भेजा हैं. वापस आ जाओ!!' मैं भारत वापस चला गया और मेरे पिताजी चाहते थे की मैं उनके कारोबार में शामिल हो जाऊ. मुझे व्यवसाय में कोई दिलचस्पी नहीं थी, मैंने कहाँ, 'ठीक हैं, मैं कॉलेज वापस चला जाता हूँ'. मैंने वैसा ही किया और गणित का अध्ययन किया. मुझे गणित से

प्यार हो गया. यह एक बहुत ही अच्छा विषय है. मैंने गणित में मास्टर्स समाप्त किया, फिर मेरे पिताजी ने कहाँ, 'अब तुम क्या करने वाले हो?'
भारत में एक इसाई स्कूल था और वे एक गणित के शिक्षक की खोज में थे, और उन्होंने मेरे सामने नौकरी का प्रस्ताव रखा. वह स्कूल दक्षिण बाप्टिस्ट द्वारा चलाया जा रहा था. वहां के हेडमास्टर सिडनी, ऑस्ट्रेलिया के एक ऑस्ट्रेलियाई मिशिनरी थे और उन्होंने ही मुझे वह नौकरी दी. मैं ही पहला गैर इसाई था, जिसे उस स्कूल ने नौकरी पर रखा था. मेरे पिताजी ने मुझे वहां जाने की आज्ञा दे दी सोंच के की, इसाई स्कूल में पढाने के कुछ साल पश्चात मुझे एहसास होगा की वहां पर्याप्त पैसा नहीं हैं, और मैं वापस उनके पास आकर उनसे नौकरी की बिनती करूँगा. वे क्या महसूस नहीं कर पाए और मुझे भी नहीं पता चला की, यह वही जगह होगी जहाँ मैं यीशु मसीह के बारे में सुनूंगा. मैं वहां मई १९६० में गया, और इसी स्कूल में तीन साल बाद, जुलाई १९६३ में मैं इसाई बन गया. ऐसा क्या हुआ था? खैर, वहां व्हीटन, इल्लिनोइस से एक अमेरिकन मिशिनरी थे, वे मेरे पास आये और उन्होंने मुझसे कहा, 'यीशु मसीह पर विश्वास करो और तुम बच जाओगे.' और मैंने इस प्रिय आदमी से पूछा, 'विश्वास करने का अर्थ क्या है?' वे पूरी रीति से मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं दे सके. उन्होंने मेरे साथ पैंतालिस मिनट तक बातें की, और फिर उन्होंने कहा, 'ठीक हैं, मैं तुम्हारे लिए प्राथना करता हूँ, लेकिन मैं यह देख सकता हूँ की तुम सच के लिए तैयार नहीं हो'. और उन्होंने मुझे अकेला छोड़ दिया. उस स्कूल के प्रिंसिपल, वो ऑस्ट्रलियाई मिशिनरी मुझे दो कारणों से पसंद करते थे, उनको भी गणित पसंद था, और उन्हें और मुझे दोनों ही को टेनिस से प्यार था. इसलिए हम दोनों की अच्छी बनती थी. फिर उन्होंने मुझे अपने घर, बाइबल अध्ययन के लिए आमंत्रित किया. मैंने सोंचा, 'बाइबल अध्ययन के लिए कौन जाना चाहेगा'? लेकिन मैं गया. उस बाइबल अध्ययन में जहाँ मैं पहली बार गया, वहां एक ब्रिटिश लड़की थी, एक मिशिनरी जो खुद भी इस बाइबल अध्ययन के लिए आई थी. जब मैंने उस लड़की को देखा, मैं मोहित हो गया. मैंने उससे पूछा की क्या वह मेरे साथ बाहर जाना पसंद करेगी, उसने कहाँ, 'नहीं, मैं सिर्फ ईसाईयों के साथ बाहर जाती हूँ', मैंने सोंचा बहुत ही अभिमानी जवाब था. लेकिन क्यूंकि वह वहां पर थी, और उसने मुझसे कहा था की 'मैं तुमसे बात करुँगी', मैंने निश्चय किया की बाइबल अध्ययन में ज़रूर जाऊँगा, उस लड़की के पास बैठने और उसको देखने के लिए.

बाइबल अध्ययन में दो बातें हुई, लोग सवाल पूछने के लिए नहीं डरते थे और लोग यह कहने को भी नहीं डरते थे की, 'मुझे जवाब नहीं पता'. वे इस मामले में बहुत इमानदार थे. वे सारे खोजकर्ता थे: देख रहे थे, उत्तर ढूंढ रहे थे. अभी भी मुझे मुश्किल लगती हैं उन लोगों से बातें करना जो यह संकेत देते है की उन्हें सारे जवाब मालूम हैं. यह विश्वास करना मेरी समझ के बाहर हैं की ऐसा कोई व्यक्ति हैं जो अपने जीवन में इस बिंदु तक पहुच गया है जहाँ उसे कोई और उत्तर की ज़रुरत नहीं हैं. मुझे नहीं लगता अगर आप परम सत्य के एक सच्चे साधक हैं, ऐसा कुछ मुमकिन हैं.

तीन, उन्होंने मुझे समूह के एक हिस्से के रूप में स्वीकार किया. उन्होंने मुझसे यह नहीं कहाँ, 'देखो तुम एक इसाई नहीं हो तो तुम यहाँ के नहीं हो'. मैं हर तरह के प्रश्न पूछता और वे बड़े धैर्य के साथ मुझे जवाब देने की कोशिश करते. और जिनका उत्तर वे नहीं दे पाते, वे कहते, ' हमें नहीं पता हैं, लेकिन चलो हम मिलकर इसे पता लगाने की कोशिश करते हैं' . स्कूल के प्रिंसिपल ने मुझे युहन्ना रचित सुसमाचार की एक प्रतिलिपि दी, इस सुसमाचार के पहले दो शब्द है, 'आदि में'. अब अगर आप एक हिन्दू हैं, यह शब्द आपको बहुत पेचीदा लगेगा, क्यूंकि हिन्दू धर्म शुरुआत के बारे में बात नहीं करता. हिन्दू धर्म में सब कुछ एक निरंतरता हैं, तो मैं समझ नहीं पाया की 'आदि में' का मतलब क्या हैं. लेकिन युहन्ना रचित सुसमाचार ने वाकई में मुझसे बात की. और एक बात हुई. हिन्दू ग्रंथों में से मेरे जो सवाल थे, जब मैं युहन्ना रचित सुसमाचार पढ़ रहा था, ऐसा लगा मानो मेरे सवालो के उत्तर मुझे इस सुसमाचार से मिल रहे थे.
मैं जैसे देख रहा था, मुझे एक योग्य मिला उस बात का जिससे हिन्दू धर्म के खोज के सारे उत्तर युहन्ना रचित सुसमाचार द्वारा संतोषजनक रीति से हमें प्राप्त होते हैं. और फिर भी किसी ने मुझसे इस बारे में बात नहीं की. अब यह दिलचस्प था. बाइबल अध्ययन में किसी ने मुझसे यह नहीं कहा की, 'तुम इसाई बन जाओ'. वे मुझे समूह का एक हिस्सा बनाना चाहते थे, और इसाई बनने के लिए मुझ पर कोई दबाव नहीं डाला. मैंने ऐसा जब कुछ समय तक किया, ठीक उसी समय, मेजर लन थॉमस नामक एक व्यक्ति उस शहर को आया. उन्होंने एक सप्ताह लम्बी मीटिंग का एक चर्च में आयोजन किया. मैं मेजर थॉमस को नहीं जानता था. लेकिन परमेश्वर ने तय किया था, यह अंग्रेज लड़की ने कहाँ, 'क्या तुम जाकर मेजर थॉमस को सुनना पसंद करोगे'? मैंने कहाँ, 'मैं जाऊँगा अगर तुम भी मेरे साथ चलोगी'. उसने कहाँ, 'बेशक मैं तुम्हारे साथ चलूंगी. मैं कैसे इनकार कर सकती हूँ.' तो हम मिलकर, मेजर थॉमस को सुनने शहर के उस चर्च में गए. ओह! वो शाम मेरे जीवन के समसे मनोहर शामो में से एक था. हम बाद में एक एक कप कॉफ़ी के लिए भी गए. मेजर थॉमस एक प्रमुख वक्ता है. मैंने बहुत ध्यान से उन्हें सुना. उन्होंने करीब एक घंटा तक वचन दिया, और जब मैं उनसे मिलकर पूछा, 'सर, क्या मैं आपके पास आके आपसे कुछ बात कर सकता हूँ', उन्होंने मुझे समय दिया. हमने नीजी सत्र में साढ़े चार घंटे तक बात की. उन्होंने मेरे प्रश्नों का यत्न, प्यार और ज्ञान से उत्तर दिया. अब यह मैं नहीं जानता, अगर आपको मालूम हैं की नहीं, लेकिन मेजर थॉमस कभी भी आपको इसाई होने को नहीं कहते है, और उन्होंने मुझे भी नहीं कहाँ. लेकिन उन्होंने मेरे पास कोई विकल्प भी नहीं छोड़ा, बल्कि मसीह की छिपी आयामों का खोज करना. युहन्ना रचित सुसमाचार, बाइबल अध्ययन, लोगों की जीवन शैली, मेजर थॉमस के साथ हुई भेट सभी उस परम प्रश्न की ओर संकेत किया, 'मैं यीशु मसीह के साथ क्या करूँ?' मैंने कहाँ, खैर मैं कुछ नुक्सान में नहीं हूँ, अगर यीशु सच्चा है, तो मेरी खोज मुझे उन तक ज़रूर पहुंचाएगी, अगर वे गलत हैं तो भी मैं कुछ नहीं खोऊंगा'. और इस प्रकार की बौद्धिक युक्तिसंगत

बना कर, १९६३ के जुलाई के मध्य, सुबह के दो बजे मैंने कहा, 'यीशु मैं आपको स्वीकार करना चाहता हूँ' , या ऐसे कुछ शब्द. दुसरे शब्दों में मैं एक इसाई बन गया.

एक हफ्ते बाद मेरा बप्तिस्मा हुआ. मेरे बप्तिस्मा के समारोह में करीब दो हज़ार लोग उपस्थित थे, क्यूंकि कोई यह विश्वास करने को तैयार नहीं था की मैं वाकई में एक इसाई बन सकता हूँ. उन्हें अपने आप देखना था. और फिर मैंने अपने माता पिता को फ़ोन किया क्यूंकि मैं उन्हें भी शुभ सन्देश देना चाहता था. और जितना बहादुर मैं हूँ, मैंने अपने पिता को फ़ोन नहीं किया, मैंने अपनी माँ से बात की, और उन्हें जो भी हुआ था सब कुछ बता दिया. फ़ोन पर चुप्पी छा गयी, माँ ने कहाँ, 'मुझे तुम्हारे पिता को इस बारे में बताना होगा.' मैंने कहाँ, 'ठीक हैं, मैं भी आपसे यह ही उम्मीद करता हूँ'. मेरा मानना हैं की माँ ने पिताजी को ज़रूर बताया होगा, लेकिन मैं उन लोगों से कुछ नहीं सुना. मैं जानता हूँ की पिताजी ने छत सर पर उठा लिया होगा. वे काफी गुस्से में थे, और मुझे अस्वीकार और दायवंचित कर दिया. १९६३ के उस दिन से आज तक, मेरा अपने परिवार के साथ कोई संपर्क नहीं रहा. मेरे परिवार ने मेरा नाम परिवार की सूंची में से निकाल दिया, मानो मैं हूँ ही नहीं. मेरे चाचा, पिताजी के छोटे भाई, वे भी एक महत्वपूर्ण व्यक्ति थे, उन्होंने मुझे जहर देकर मारने की कोशिश की. सरासर हताश स्थिति में कोई मुझसे बात तक नहीं करता था, मेरे दोस्त मुझे छोड़ दिए, मेरे रिश्तेदारों ने मुझे अनदेखा कर दिया, किसी को भी मुझसे कोई मतलब नहीं था. सारे मिशनरी जो मेरे साथ काम करते थे, मुझसे दूर चले गए, क्यूंकि उन्हें डर था की मेरे परिवार का प्रभाव उनकी उपस्थिति में कोई बाधा न डाले, क्यूंकि भारत में वीसा को रद्द किया जा सकता हैं.

जब मेरे परिवार के किसी सदस्य का निधन हुआ, मैं भारत आ गया. मुझे घर में रहने की अनुमति नहीं दी गयी. किसी भी पारिवारिक समारोह में शामिल होने की अनुमति मुझे नहीं दिया गया. असल में मेरे भाई ने मुझसे कहाँ, 'तुम परिवार के लिए अपमान का कारण हो, हमें और अपमानित करने के लिए तुम यहाँ क्यूँ आये हो'? तो मैं वापस अमेरिका आ गया, ज़ाहिर है मेरी आवश्यकता नहीं थी. एक साल बाद मेरी माँ का निधन हो गया, और मुझे उनकी मौत की खबर उनके मरने के एक साल बाद तक नहीं मिली. एक ही चिट्ठी जो मेरी बहन ने कभी मुझे लिखी थी, वो माँ के निधन के बाद की थी, उसमे सटीक शब्दों में ऐसा लिखा था, 'संयोग से माँ का निधन हो गया'. मैं अपने माँ के बहुत करीब था. मैं उसे बहुत प्यार करता था. वह मेरे जीवन की एक बहुत ही ख़ास व्यक्ति थी. मेरा अपनी माँ की बिमारी के बारे में नहीं जानना, अभी भी मैं उसे अपने परिवार के सदस्यता के लिए एक अपमान के रूप में लेता हूँ. बहुत दर्द होता हैं. मेरा यकीन करिए, यह बहुत गहरा दर्द देता हैं, क्यूंकि मैंने ऐसे उपचार के लायक कोई भी कार्य नहीं किया था. क्यूँ इसाई बनने पर किसी व्यक्ति को इतनी बड़ी शुल्क देनी पढ़ती हैं? मेरे बच्चे बड़े हो गए हैं. मेरी बेटी अगले साल इल्लिनोइस, शाम्पेन के एक विश्विद्यालय में वरिष्ठ हो जायेगी. जब वह छोटी थी, उसने मुझसे पूंछा, 'पिताजी, दादी किसे कहते है?' आप एक बच्चे को दादी की

व्याख्या कैसे देंगे? दादी एक अवधारणा नहीं हैं जिसके बारे में आप बात कर सके, यह एक अनमोल रिश्ता हैं जिसका की आप आनंद लेते हैं. मेरे बच्चों को चाचा, चाची का अर्थ नहीं मालूम हैं, उन्हें अपने चचेरे भाई बहन के साथ खेलने का मतलब नहीं मालूम है. हा, मैंने जो परमेश्वर में पाया है, उसकी उन्होंने मुझसे बहुत बड़ी कीमत ली है. एक तरफ हाँ, अकेलापन, परिवार का व्यवहार, और दूसरी ओर परमेश्वर हैं, वह हमारी ज़रूरतों को पूरा करता हैं. वह प्रदान करता हैं, लोगो को आपके साथ खड़े होने के लिए उठाता हैं.

आप कभी भी अकेले नहीं होंगे, क्यूंकि वह हमेशा, हमेशा, हमेशा आपके साथ रहता हैं. किसी ने मुझसे यह सवाल किया, क्या मैं कुछ और करता अगर मैं जानता की मेरे माता पिता की प्रतिक्रिया क्या होंगी? मैंने इस बारे में सोंचा. हाँ, मैं अपने परिवार के साथ रहता, लेकिन अगर परमेश्वर और परिवार के बीच में निर्णय करना होता, तो आज भी मेरी प्रतिक्रिया वही होती जो १९६३ में थी.

डा. महेंद्र सिंघल